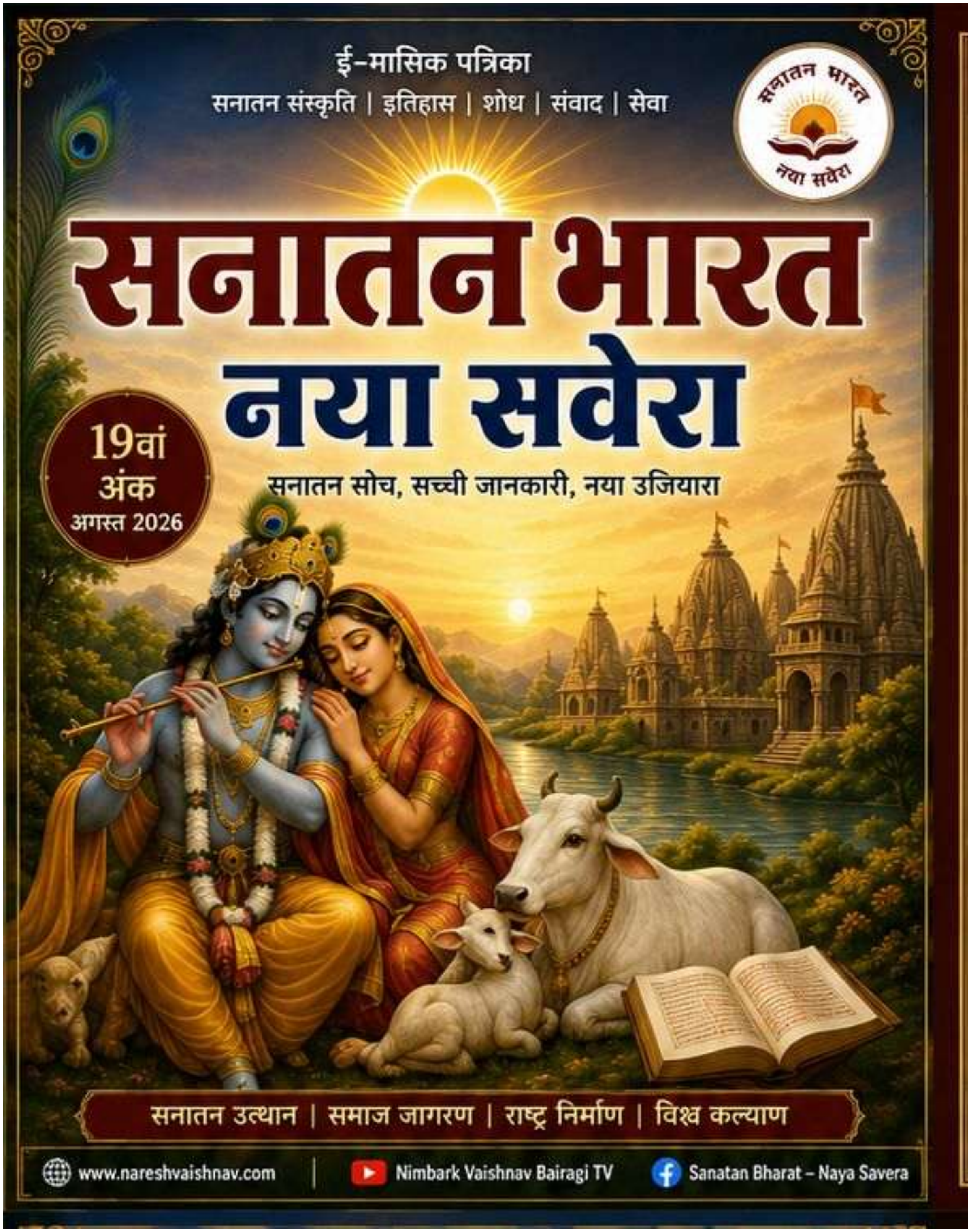

ई–मासिक पत्रिका
सनातन संस्कृति | इतिहास | शोध | संवाद | सेवा
सनातन भारत
नया सवेरा
सनातन भारत नया सवेरा
19वां अंक अगस्त 2026
सनातन सोच, सच्ची जानकारी, नया उजियारा
सनातन उत्थान | समाज जागरण | राष्ट्र निर्माण | विश्व कल्याण
www.nareshvaishnav.com
Nimbark Vaishnav Bairagi TV
Sanatan Bharat – Naya Savera

|| श्री ||

सनातन भारत — नया सवेरा

ई-मासिक पत्रिका | 19वाँ अंक | अगस्त 2026

स्वतंत्रता से स्वाभिमान और कर्तव्य तक

एक निःशुल्क सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक ई-पत्रिका

www.nareshswaminimbark.in

पत्रिका परिचय

प्रकाशन	सनातन भारत — नया सवेरा (ई-मासिक, निःशुल्क)
अंक	19वाँ अंक, अगस्त 2026
संपादक एवं संकलनकर्ता	नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क' — सेवानिवृत्त मानद नायब सूबेदार, भारतीय सेना | इतिहासकार | शोधकर्ता | अंतर्राष्ट्रीय लेखक
वेबसाइट	www.nareshswaminimbark.in
उद्देश्य	सनातन संस्कृति, भारतीय ज्ञान-परंपरा, इतिहास, शिक्षा, संस्कार एवं सामाजिक जागरूकता पर निःशुल्क, सकारात्मक संवाद
वितरण	भारत एवं विदेश में निःशुल्क डिजिटल वितरण हेतु

इस पत्रिका में प्रस्तुत ऐतिहासिक एवं ग्रंथीय सामग्री का उद्देश्य शिक्षा एवं सांस्कृतिक जागरूकता है। जहाँ तथ्य और आस्था में अंतर है, वहाँ यह स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

15 अगस्त — स्वतंत्रता से स्वाभिमान और कर्तव्य तक

15 अगस्त भारत के राष्ट्रीय जीवन का एक महत्वपूर्ण दिन है। यह दिन हमें स्वतंत्रता के संघर्ष, असंख्य ज्ञात-अज्ञात लोगों के योगदान और उस जिम्मेदारी की याद दिलाता है जो स्वतंत्रता के साथ आती है।

स्वतंत्रता केवल अधिकारों का नाम नहीं है। स्वतंत्रता के साथ कर्तव्य, अनुशासन, सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्र के प्रति ईमानदारी भी जुड़ी होती है।

भारत की पहचान केवल आधुनिक राजनीतिक इतिहास से नहीं बनी। भारतीय सभ्यता की यात्रा अत्यंत प्राचीन है, जिसमें धर्म, दर्शन, शिक्षा, परिवार, सेवा, प्रकृति के प्रति सम्मान और लोककल्याण जैसे अनेक मूल्य निरंतर दिखाई देते हैं।

सनातन परंपरा का मूल संदेश किसी एक व्यक्ति या एक काल तक सीमित नहीं है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म, कर्तव्य और धर्म के विषय में मार्गदर्शन देते हैं। इसका एक व्यापक संदेश यह है कि मनुष्य को अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होना चाहिए।

आज स्वतंत्र भारत में हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को केवल अधिकारों की जानकारी न दें, बल्कि कर्तव्य और संस्कार भी दें।

इसी उद्देश्य से 'सनातन भारत — नया सवेरा' का यह 19वाँ अंक देश और विदेश में निःशुल्क पहुँचाने का प्रयास है। इस पत्रिका का उद्देश्य किसी व्यक्ति या संस्था का प्रचार नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति, भारतीय ज्ञान-परंपरा, इतिहास, शिक्षा, संस्कार और सामाजिक जागरूकता पर सकारात्मक संवाद को आगे बढ़ाना है।

15 अगस्त के अवसर पर हमारा संकल्प

- स्वतंत्र भारत में जिम्मेदार नागरिक बनें
- अपनी संस्कृति को समझें
- इतिहास को प्रमाणों के साथ पढ़ें
- आने वाली पीढ़ी को ज्ञान एवं संस्कार दें

इस अंक की विशेष यात्रा

इस अंक में हम महाभारत और रामायण के प्रसंगों को केवल कथा के रूप में नहीं, बल्कि उनसे मिलने वाली जीवन-शिक्षा के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करेंगे।

साथ ही इस अंक में शामिल हैं

- सनातन मूल्यों की वर्तमान जीवन में उपयोगिता
- शिक्षा और संस्कार
- सड़क सुरक्षा और नागरिक जिम्मेदारी
- भारतीय संस्कृति और सामाजिक दायित्व
- युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक विचार
- अनुशासन और सेवा — सैन्य जीवन से सीख

हमारा प्रयास रहेगा कि धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक अध्ययन के बीच उचित अंतर बनाए रखा जाए। जहाँ कोई बात ग्रंथीय परंपरा से संबंधित है, वहाँ उसे उसी रूप में प्रस्तुत किया जाएगा और जहाँ इतिहास या पुरातात्त्विक प्रमाण आवश्यक हैं, वहाँ प्रमाण और स्रोतों को प्राथमिकता दी जाएगी।

महाभारत — अध्याय 1

श्रीकृष्ण का धर्म और कर्म का संदेश

महाभारत भारतीय साहित्य और दार्शनिक परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके भीतर युद्ध, राजनीति, परिवार, नैतिकता, कर्तव्य, धर्म और मानव जीवन के अनेक प्रश्नों पर विचार मिलता है।

महाभारत के भीष्म पर्व में स्थित भगवद्गीता में अर्जुन युद्धभूमि में अपने संबंधियों और गुरुओं को सामने देखकर मोह और नैतिक दुविधा में पड़ जाते हैं। इसी परिस्थिति में श्रीकृष्ण उन्हें कर्म, आत्मा, धर्म और कर्तव्य के विषय में उपदेश देते हैं।

गीता का एक प्रसिद्ध सिद्धांत है कि मनुष्य को अपने कर्म पर अधिकार है, लेकिन कर्म के फल पर उसका पूर्ण नियंत्रण नहीं है।

इस शिक्षा को आज के जीवन में भी समझा जा सकता है। विद्यार्थी का कर्तव्य अध्ययन करना है, शिक्षक का कर्तव्य ईमानदारी से शिक्षा देना है, नागरिक का कर्तव्य कानून और समाज के प्रति जिम्मेदार रहना है और समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने कार्य को ईमानदारी से करे।

श्रीकृष्ण का संदेश केवल युद्ध के संदर्भ में सीमित नहीं माना जाना चाहिए। गीता के व्यापक दार्शनिक संदेश में कर्म, आत्मसंयम, ज्ञान, भक्ति और कर्तव्य जैसे विषय प्रमुख हैं।

आज के समय में जब मनुष्य परिणाम की चिंता में तनावग्रस्त रहता है, कर्म और कर्तव्य पर ध्यान केंद्रित करने की यह शिक्षा विशेष रूप से प्रासंगिक दिखाई देती है।

आज के लिए सीख

कर्तव्य से भागना समाधान नहीं है। ज्ञानपूर्वक निर्णय लेना, उचित कर्म करना और अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाना ही जीवन की महत्वपूर्ण साधनाओं में से एक है।

संदर्भ: महाभारत, भीष्म पर्व, भगवद्गीता।

महाभारत — अध्याय 2

विदुर नीति — शासन, चरित्र और जीवन की सीख

महाभारत में विदुर एक महत्वपूर्ण पात्र हैं। वे धृतराष्ट्र के मंत्री और पांडवों-कौरवों के पारिवारिक संबंधों से जुड़े हुए व्यक्ति थे। महाभारत के उद्योग पर्व में विदुर और धृतराष्ट्र के संवादों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

विदुर बार-बार धृतराष्ट्र को न्याय, संयम और विवेक का मार्ग अपनाने की सलाह देते हैं। वे लोभ, क्रोध, अहंकार और अन्य अवगुणों से बचने की आवश्यकता बताते हैं।

विदुर की शिक्षाओं का महत्व केवल राजदरबार तक सीमित नहीं है। परिवार, समाज और प्रशासन—हर क्षेत्र में विवेक और नैतिकता की आवश्यकता रहती है।

जिस व्यक्ति के पास शक्ति हो लेकिन विवेक न हो, वह अपने साथ-साथ दूसरों को भी नुकसान पहुँचा सकता है। इसी प्रकार धन और पद होने के बावजूद यदि व्यक्ति में संयम और चरित्र नहीं है तो उसकी उपलब्धियाँ स्थायी नहीं रह सकतीं।

विदुर नीति में ऐसे अनेक विचार मिलते हैं जो व्यक्ति को आत्मसंयम, सत्य, विवेक और उचित आचरण की ओर प्रेरित करते हैं।

आज के समाज के लिए संदेश

आज सोशल मीडिया के युग में किसी सूचना को तुरंत स्वीकार या प्रसारित कर देना आसान है। लेकिन विवेकपूर्ण व्यक्ति किसी बात को आगे बढ़ाने से पहले उसकी सत्यता जाँचता है।

इसी प्रकार सार्वजनिक जीवन में पद से अधिक महत्वपूर्ण चरित्र और निर्णय की निष्पक्षता है।

परिवार के लिए सीख

बच्चों को केवल सफलता प्राप्त करने की शिक्षा नहीं, बल्कि यह भी सिखाना आवश्यक है कि—

- सत्य बोलें
- बड़ों का सम्मान करें
- गलत कार्य से बचें
- अपनी सफलता का उपयोग समाज के हित में करें

संदर्भ: महाभारत, उद्योग पर्व — विदुर-धृतराष्ट्र संवाद एवं विदुर नीति परंपरा।

महाभारत — अध्याय 3

महाभारत से आज के समाज के लिए सबक

महाभारत को केवल एक प्राचीन युद्ध की कथा के रूप में पढ़ना इसके व्यापक साहित्यिक और दार्शनिक स्वरूप को सीमित कर देता है। इसमें मनुष्य के निर्णय, परिवार के संघर्ष, सत्ता, नैतिकता, मित्रता, प्रतिशोध, न्याय और कर्तव्य जैसे अनेक विषय दिखाई देते हैं।

महाभारत का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसके पात्र पूर्णतः एकरेखीय नहीं हैं। अनेक पात्रों के निर्णयों में जटिल परिस्थितियाँ दिखाई देती हैं। यही कारण है कि महाभारत आज भी नैतिक प्रश्नों पर विचार करने का अवसर देता है।

1. परिवार में संवाद आवश्यक है

कुरु परिवार के संघर्ष में संवाद और निर्णय की समस्याएँ बार-बार सामने आती हैं। इससे आधुनिक परिवारों के लिए यह सीख ली जा सकती है कि मतभेद होने पर संवाद समाप्त नहीं होना चाहिए।

2. लोभ और अहंकार विनाशकारी हो सकते हैं

सत्ता और संपत्ति के प्रति अत्यधिक आसक्ति व्यक्ति को विवेकहीन बना सकती है। इसलिए उपलब्धि के साथ संयम आवश्यक है।

3. सही निर्णय के लिए विवेक जरूरी है

कठिन परिस्थितियों में भावनाओं के साथ विवेक भी आवश्यक है। यही कारण है कि महाभारत में नीति, धर्म और कर्तव्य पर बार-बार चर्चा होती है।

4. शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान नहीं

शिक्षा व्यक्ति को निर्णय लेने योग्य और जिम्मेदार नागरिक बनाने का माध्यम भी है। केवल जानकारी होना पर्याप्त नहीं; उसका उचित उपयोग भी आवश्यक है।

5. नई पीढ़ी को इतिहास पढ़ना चाहिए

इतिहास को केवल गौरव या आलोचना के लिए नहीं, बल्कि उससे सीखने के लिए पढ़ना चाहिए। स्रोतों की जाँच और विभिन्न मतों को समझना एक स्वस्थ ऐतिहासिक दृष्टि विकसित करता है।

निष्कर्ष

महाभारत का अध्ययन हमें अपने समय के प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा दे सकता है। परिवार से लेकर शासन तक और व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जिम्मेदारी तक—इसके अनेक प्रसंग आज भी चिंतन का विषय बन सकते हैं।

महाभारत हमें केवल अतीत की कहानी नहीं देता; वह मनुष्य के निर्णयों और उनके परिणामों पर विचार करने का अवसर भी देता है।

संदर्भ: महाभारत — विभिन्न पर्व; भगवद्गीता — भीष्म पर्व।

रामायण

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का संदेश

रामायण भारतीय जनमानस में सबसे अधिक पढ़े और सुने जाने वाले ग्रंथों में से एक है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित यह ग्रंथ श्रीराम के जीवन के माध्यम से मर्यादा, कर्तव्य और आदर्श आचरण का संदेश देता है। श्रीराम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता है, अर्थात् वह व्यक्तित्व जिसने पुत्र, भाई, पति और राजा—हर भूमिका में मर्यादा का पालन किया।

पिता के वचन की रक्षा के लिए राजगद्दी त्यागकर वनगमन स्वीकार करना, श्रीराम के चरित्र की दृढ़ता को दर्शाता है। यह प्रसंग यह सिखाता है कि दिए गए वचन और पारिवारिक कर्तव्य व्यक्तिगत सुविधा से अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

लक्ष्मण का भ्रातृ-प्रेम, भरत का त्याग और सीता की धैर्यशीलता—ये सभी प्रसंग परिवार में परस्पर समर्पण और विश्वास की शिक्षा देते हैं। रामायण में वर्णित 'राम राज्य' की अवधारणा न्यायपूर्ण, पारदर्शी और जनकल्याणकारी शासन का प्रतीक मानी जाती है, जहाँ शासक स्वयं को प्रजा के प्रति उत्तरदायी मानता है।

रामायण के अनेक प्रसंगों पर विद्वानों में भिन्न व्याख्याएँ भी रही हैं, और विभिन्न क्षेत्रीय परंपराओं में इसके स्वरूप में विविधता पाई जाती है। इतिहास और पुरातत्त्व से जुड़े प्रश्नों पर शोध निरंतर जारी है, अतः पाठकों को स्रोत-सम्मत दृष्टिकोण अपनाने का सुझाव दिया जाता है।

आज के लिए सीख

मर्यादा का अर्थ केवल संयम नहीं, बल्कि अपनी भूमिका और उत्तरदायित्व के प्रति सजगता है। परिवार, कार्यक्षेत्र और समाज में अपनी मर्यादा का पालन करना ही सशक्त चरित्र की पहचान है।

संदर्भ: वाल्मीकि रामायण।

सनातन मूल्यों की वर्तमान जीवन में उपयोगिता

सनातन परंपरा के मूल्य—सेवा, संयम, सत्य, अहिंसा और कृतज्ञता—किसी विशेष काल तक सीमित नहीं हैं। ये मूल्य आज के तीव्र गति वाले जीवन में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे।

उदाहरण के लिए, कार्यक्षेत्र में 'निष्काम कर्म' का सिद्धांत व्यक्ति को परिणाम की अत्यधिक चिंता किए बिना पूर्ण निष्ठा से कार्य करने की प्रेरणा देता है। इससे तनाव कम होता है और कार्य की गुणवत्ता में सुधार होता है।

परिवार में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना—अर्थात् संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानना—आज के वैश्वीकृत समाज में सहिष्णुता और सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

पर्यावरण के संदर्भ में सनातन परंपरा में नदी, वृक्ष और पशु-पक्षियों को पूजनीय माना गया है। यह दृष्टिकोण आज की पर्यावरण-संकट की चुनौतियों के समय विशेष रूप से प्रासंगिक है।

व्यावहारिक सुझाव

प्रतिदिन कुछ समय आत्मचिंतन के लिए निकालें, कार्य को कर्तव्य-भाव से करें, तथा परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्व को स्मरण रखें।

शिक्षा और संस्कार

प्राचीन भारत की गुरुकुल परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण भी था। विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में अनुशासन, सेवा-भाव और आत्मसंयम सीखता था।

आज की शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक कुशलता पर अधिक बल दिया जाता है, जो कि आवश्यक भी है। किंतु इसके साथ नैतिक शिक्षा और संस्कार का समावेश भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

परिवार शिक्षा की पहली पाठशाला है। माता-पिता और अभिभावकों का आचरण बच्चों के व्यक्तित्व-निर्माण में गहरा प्रभाव डालता है। विद्यालय और परिवार—दोनों के समन्वित प्रयास से ही संतुलित शिक्षा संभव है।

संस्कार का अर्थ है वह आंतरिक प्रशिक्षण जो व्यक्ति को विनम्र, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाता है। शिक्षा और संस्कार का यह संतुलन ही किसी राष्ट्र के भविष्य की नींव रखता है।

अभिभावकों के लिए सुझाव

- बच्चों के साथ प्रतिदिन संवाद करें
- उन्हें असफलता से सीखने के लिए प्रोत्साहित करें
- अपने आचरण से उदाहरण प्रस्तुत करें
- पढ़ाई के साथ-साथ खेल, कला और सेवा-कार्यों को भी प्रोत्साहन दें

सड़क सुरक्षा और नागरिक जिम्मेदारी

सड़क सुरक्षा केवल यातायात नियमों के पालन तक सीमित विषय नहीं है, यह एक नागरिक कर्तव्य भी है। असावधानी अथवा नियमों की अनदेखी से न केवल स्वयं का, बल्कि अन्य लोगों का जीवन भी खतरे में पड़ सकता है।

अनुशासन की यह भावना—जो सैन्य जीवन की आधारशिला है—सड़क पर भी उतनी ही आवश्यक है। समय की पाबंदी के नाम पर नियमों की अवहेलना करना उचित नहीं है।

प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक बातें

- हेलमेट और सीट-बेल्ट का नियमित उपयोग करें
- निर्धारित गति-सीमा का पालन करें
- मद्यपान अथवा मोबाइल के प्रयोग के दौरान वाहन न चलाएँ
- पैदल यात्रियों और साइकिल-सवारों को प्राथमिकता दें
- आपातकालीन वाहनों को रास्ता दें
- बच्चों को प्रारंभ से ही यातायात-अनुशासन सिखाएँ

स्मरण रखें

एक जिम्मेदार नागरिक न केवल स्वयं नियमों का पालन करता है, बल्कि दूसरों को भी सुरक्षित यात्रा हेतु प्रेरित करता है। सड़क पर अनुशासन, राष्ट्र के प्रति अनुशासन का ही एक रूप है।

भारतीय संस्कृति और सामाजिक दायित्व

भारतीय संस्कृति की विशेषता उसकी विविधता में एकता है। भाषा, वेशभूषा, खान-पान और रीति-रिवाजों में भिन्नता के बावजूद, पारिवारिक मूल्य, अतिथि-सत्कार और सामूहिक उत्सव भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधते हैं।

त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, वे सामाजिक समरसता और सामुदायिक भागीदारी के अवसर भी हैं। रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम को दर्शाता है, तो दीपावली स्वच्छता और सामूहिक उल्लास का प्रतीक है।

सामाजिक दायित्व का अर्थ है अपने आस-पास के समाज के प्रति संवेदनशील रहना—चाहे वह वृद्धजनों की देखभाल हो, आवश्यकतामंद व्यक्तियों की सहायता हो, अथवा पर्यावरण-संरक्षण में योगदान हो।

आज के डिजिटल युग में भी यह आवश्यक है कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहें, साथ ही आधुनिकता को भी खुले मन से अपनाएँ। परंपरा और प्रगति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं।

सामाजिक दायित्व के छोटे किंतु महत्वपूर्ण कदम

स्थानीय समुदाय की गतिविधियों में भाग लें, पर्यावरण-संरक्षण में योगदान दें, तथा आवश्यकतामंद व्यक्तियों की यथासंभव सहायता करें।

युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक विचार

आज की युवा पीढ़ी के समक्ष अवसर और चुनौतियाँ—दोनों पहले से कहीं अधिक हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी ने ज्ञान की पहुँच को सरल बनाया है, किंतु इसके साथ ध्यान-केंद्रण और आत्म-अनुशासन की चुनौती भी बढ़ी है।

सनातन परंपरा में 'स्व-अनुशासन' को सफलता की पहली सीढ़ी माना गया है। लक्ष्य निर्धारित करना, समय का सदुपयोग करना और निरंतर अभ्यास करना—ये सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

असफलता से घबराने के बजाय उसे सीखने के अवसर के रूप में देखना आवश्यक है। महाभारत और रामायण के अनेक पात्रों ने भी कठिन परिस्थितियों का सामना धैर्य और संकल्प के साथ किया।

परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल है। अपनी सांस्कृतिक जड़ों को समझते हुए नई तकनीक और वैश्विक अवसरों का उपयोग करना ही आज की आवश्यकता है।

युवाओं के लिए संक्षिप्त सूत्र

- प्रतिदिन लक्ष्य निर्धारित करें और उसका पालन करें
- समय का सम्मान करें
- असफलता से सीखें, उससे भयभीत न हों
- अपनी संस्कृति और भाषा पर गर्व करें
- समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को कभी न भूलें

अनुशासन और सेवा

सैन्य जीवन से सीख

सैन्य जीवन अनुशासन, समर्पण और सेवा-भाव का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है। एक सैनिक का जीवन इस बात का प्रमाण है कि व्यक्तिगत हित से ऊपर राष्ट्र और समाज का हित रखा जा सकता है।

समय की पाबंदी, आदेशों का पालन, टीम-भावना और कठिन परिस्थितियों में संयम—ये गुण केवल सैन्य जीवन तक सीमित नहीं हैं। परिवार, कार्यक्षेत्र और सार्वजनिक जीवन में भी इन गुणों की आवश्यकता समान रूप से रहती है।

अनुशासन का अर्थ केवल नियमों का पालन करना नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी है। यह भावना व्यक्ति को कठिन समय में भी स्थिर और निर्णायक बनाए रखती है।

सेवा-भाव सैन्य परंपरा की आत्मा है। 'राष्ट्र प्रथम' का यह सिद्धांत नागरिक जीवन में भी अपनाया जा सकता है—अपने कार्यक्षेत्र, समाज और परिवार के प्रति निष्ठा और समर्पण के रूप में।

आज के लिए सीख

अनुशासन कोई बंधन नहीं, बल्कि आत्म-सशक्तिकरण का माध्यम है। जो व्यक्ति स्वयं पर अनुशासन रखता है, वही समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को प्रभावी ढंग से निभा सकता है।

श्रद्धांजलि

अनगिनत गुमनाम नायकों की गाथा

भारत की स्वतंत्रता के इतिहास में अनेक ऐसे नाम हैं जिन्हें इतिहास के पन्नों में विस्तृत स्थान मिला, किंतु उनसे कहीं अधिक संख्या उन अनगिनत सामान्य नागरिकों की है जिनका योगदान अभिलेखों में दर्ज नहीं हो सका—किसान, मजदूर, महिलाएँ, विद्यार्थी और सामान्य ग्रामवासी, जिन्होंने अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

किसी ने आंदोलनकारियों को शरण दी, किसी ने गुप्त संदेश पहुँचाए, किसी ने अपने घर का अन्न साझा किया, तो किसी ने केवल अपनी उपस्थिति से सत्याग्रह की शक्ति बढ़ाई। इन नामों का इतिहास में अभिलेख भले ही सीमित हो, किंतु राष्ट्र-निर्माण में उनका योगदान अमूल्य है।

यह स्मरण रखना आवश्यक है कि स्वतंत्रता किसी एक व्यक्ति या घटना का परिणाम नहीं, बल्कि पीढ़ियों के सामूहिक त्याग और संघर्ष का परिणाम है। इतिहास के अध्ययन में हमें बड़े नामों के साथ-साथ इन गुमनाम योगदानों को भी सम्मान देना चाहिए।

आज के लिए सीख

प्रत्येक नागरिक का योगदान—चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो—राष्ट्र-निर्माण में महत्वपूर्ण है। यही भावना आज भी हमें जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देती है।

विशेष रिपोर्ट

विशेष रिपोर्ट

"देश के रक्षकों को सलाम" — रामनगर के राजकीय विद्यालय में 61 विद्यार्थियों का सम्मान

प्रकाशनार्थ: सनातन भारत नया सवेरा मासिक पत्रिका

दिनांक: 15 अगस्त, 2026 | स्थान: राजकीय उच्च विद्यालय, रामनगर (गन्नौर), सोनीपत

जय श्री राधे राधे। जय श्री कृष्णा।

79वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर सोनीपत जनपद के गन्नौर क्षेत्रांतर्गत राजकीय उच्च विद्यालय, रामनगर (कोड 3526) में ध्वजारोहण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यंत गरिमा तथा हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ श्री नरेश दास वैष्णव निम्बार्क को — जो एक सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी, अंतर्राष्ट्रीय लेखक, शोधकर्ता एवं यू.एन. वेटरन के रूप में सुपरिचित हैं।

ध्वजारोहण एवं गणमान्य उपस्थिति

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री महावीर सिंह जांगलान जी के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण संपन्न हुआ। इस अवसर पर ग्राम के गणमान्य नागरिक एवं अति विशिष्ट अतिथि श्री विजय शर्मा जी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वर्तमान सरपंच श्रीमती सुदेश कुमारी, धर्मपत्नी श्री बलराज छोक्कर जी, ने की।

राजकीय उच्च विद्यालय, रामनगर (3526) में ध्वजारोहण करते मुख्य अतिथि एवं गणमान्य नागरिक

विद्यालय की आवश्यकताओं हेतु संकल्प

ध्वजारोहण के पश्चात अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि ने विद्यालय की दो अत्यावश्यक आवश्यकताओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया — पानी की टंकी का निर्माण तथा जर्जर हो चुके शौचालय की मरम्मत। इस पर श्री विजय प्रकाश शर्मा, पुत्र स्वर्गीय श्री हरिकिशन शर्मा जी, ने पानी की टंकी के निर्माण का आश्वासन दिया, जबकि शौचालय की मरम्मत का समस्त व्यय वहन करने का संकल्प स्वयं श्री नरेश दास वैष्णव निम्बार्क, पुत्र स्वर्गीय श्री नारायण दत्त स्वामी, द्वारा लिया गया।

61 विद्यार्थियों का सम्मान — दो श्रेणियों में

सत्र 2025-26 में शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं सांस्कृतिक प्रतिभा प्रदर्शित करने वाले कुल 61 विद्यार्थियों को पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया:

(अ) शैक्षणिक श्रेष्ठता — 21 मेधावी विद्यार्थी

कक्षा एक से कक्षा दस तक प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कक्षा नौ में दो विद्यार्थियों के संयुक्त रूप से एक ही स्थान पर रहने के कारण संख्या 21 हुई।

कक्षा	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान
दसवीं	अभिषेक (पिता: प्रदीप कुमार)	हिमांशी (पिता: अमित कुमार)
नौवीं	तामन्ना (पिता: मनीन्द्र)	सिमरन (पिता: देवेंद्र) एवं रक्षित (पिता: कृष्ण)
आठवीं	गुंजन (पिता: सज्जन)	आरती (पिता: अशोक कुमार)
सातवीं	अंशु (पिता: सुनील कुमार)	कोमल (पिता: विक्रम)
छठी	जानवी (पिता: रविन्द्र कुमार)	अंकित (पिता: कुलदीप)
पाँचवीं	मुस्कान (पिता: पीतम)	महक (पिता: भगीर)
चौथी	अंजनी (पिता: तरुण)	जानवी (पिता: धनेन्द्र)
तीसरी	हिमांशी (पिता: कुलदीप)	कनिका (पिता: ऋषिपाल)
दूसरी	शिवानी (पिता: महिपाल)	नैना (पिता: अमित)
पहली	ममता (पिता: सुनील कुमार)	माही (पिता: रविन्द्र कुमार)

(आ) सांस्कृतिक प्रतिभा — 40 विद्यार्थी

कक्षा एक से दस तक के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले 40 विद्यार्थियों को भी स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पदक प्राप्त मेधावी एवं सांस्कृतिक प्रतिभा से संपन्न विद्यार्थी, मुख्य अतिथि एवं गणमान्य अतिथियों के साथ

मुख्य अतिथि का संदेश — मिट्टी का ऋण

अपने उद्बोधन में श्री नरेश दास वैष्णव निम्बार्क ने अत्यंत भावुक स्वर में कहा कि एक साधारण किसान परिवार में जन्म लेकर भारतीय सेना की वर्दी पहनकर मातृभूमि की सेवा करने का सौभाग्य मिलना, और आज उसी मिट्टी के बच्चों के मध्य खड़े होकर उन्हें सम्मानित करने का अवसर मिलना — इससे बड़ा गौरव और क्या हो सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह सम्मान व्यक्तिगत नहीं, अपितु माता-पिता के संस्कारों, गाँव की मिट्टी और भारतीय सेना की वर्दी का सम्मान है।

उन्होंने बताया कि विगत चार-पाँच वर्षों से यह सेवा-कार्य निरंतर, मानो एक अनुशासित व्रत बनकर, चल रहा है — प्रत्येक 26 जनवरी तथा 15 अगस्त को विद्यालय के बच्चों को सम्मानित करने का प्रयास सदैव किया जाता है। यह सेवा किसी बड़े धन-वैभव से नहीं, अपितु एक साधारण पेंशन में से समायोजन करके निभाई जाती है, जिसमें मिलने वाला आत्मिक संतोष किसी लेखनी से वर्णित नहीं किया जा सकता।

सीमा-प्रहरियों को नमन एवं देशवासियों से आह्वान

कार्यक्रम के समापन पर सीमा पर मातृभूमि की रक्षा में तैनात वीर जवानों को नमन किया गया तथा उनके परिवारों के प्रति हार्दिक श्रद्धा व्यक्त की गई। साथ ही देशवासियों से आह्वान किया गया कि वे देश की एकता और अखंडता को सर्वोपरि रखें, माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करें, शिक्षा के साथ संस्कारों को भी जीवन में उतारें, तथा मेहनत और ईमानदारी को अपना मार्ग बनाएँ।

भारत माता की जय। वंदे मातरम्। जय हिंद, जय भारत। जय जवान, जय किसान।

प्रस्तुति: नरेश दास वैष्णव निम्बार्क

अंतर्राष्ट्रीय लेखक, शोधकर्ता एवं यू.एन. वेटरन

वेबसाइट: www.nareshswaminimbark.in

विशेष रिपोर्ट
बैरागी समाज में पहली बार उठी शिक्षा और संस्कार की ऐसी आवाज़!
200 वर्षों का इतिहास, शिक्षा की बात और संस्कारों का संकल्प – एक मंच पर जुटे समाज के प्रबुद्धजन
प्रकाशनार्थ: सनातन भारत नया सवेरा मासिक पत्रिका
दिनांक: 16 अगस्त, 2026 | स्थान: आदरणीय शेर सिंह बैरागी धर्मशाला, महलाणा रोड



जय श्री कृष्णा। राधे-राधे।

आज दिनांक 16 अगस्त 2026 को आदरणीय शेर सिंह बैरागी धर्मशाला, महलाणा रोड पर "प्रबुद्ध मिलन समारोह – शिक्षा और संस्कार" का गरिमामय आयोजन किया गया। यह अवसर इसलिए भी विशेष रहा क्योंकि वैष्णव बैरागी समाज में शिक्षा और संस्कार जैसे महत्वपूर्ण विषय पर पहली बार इस प्रकार का सम्मेलन आयोजित किया गया।

समारोह में समाज के प्रबुद्धजन, इतिहासकार, लेखक, शिक्षाविद, समाजसेवी एवं विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने वाले सम्मानित व्यक्तित्व एक मंच पर एकत्र हुए। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था – नई पीढ़ी को शिक्षा के साथ संस्कार, संस्कृति और अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़ना।

मंच संचालन की जिम्मेदारी

समारोह का मंच संचालन अंतर्राष्ट्रीय लेखक नरेश दास वैष्णव निम्बार्क ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंच संचालक द्वारा मुख्य अतिथियों, अध्यक्ष महोदय एवं सभी सम्मानित अतिथियों को मंच पर ससम्मान विराजमान करवाया गया। इसके बाद सभी अतिथियों का माला एवं पटका पहनाकर सम्मान किया गया।

मंच पर विराजमान अतिथियों एवं प्रबुद्धजनों को माला-पटका पहनाकर सम्मानित करते हुए

इसके पश्चात विधिवत रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मंच संचालक नरेश दास वैष्णव निम्बार्क ने दीपक के प्रकाश की महत्ता बताते हुए कहा कि दीपक केवल अंधकार दूर करने का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कार, विवेक और सकारात्मक विचारों का प्रतीक भी है।

दीप प्रज्वलन के पावन क्षण में उपस्थित अतिथिगण एवं समाजबंधु

समारोह की गरिमामय उपस्थिति

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में ज्ञान सिंह बैरागी जी, प्रधान कुरुक्षेत्र धर्मशाला एवं कैप्टन योगेश बैरागी जी, चेयरमैन हरियाणा सरकार उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता भूतपूर्व कर्नल टेकचंद दहिया जी ने की।

अति विशिष्ट अतिथियों में इतिहासकार चरण सिंह स्वामी जी, मेरठ तथा लेखिका आरुषि स्वामी जी, शुक्रताल उपस्थित रहीं।

विशिष्ट अतिथियों में पूर्व प्रिंसिपल दया सिंह स्वामी जी, महासचिव कुरुक्षेत्र धर्मशाला; विकास स्वामी जी, करनावल, 37 वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर; प्रधान नरेंद्र बैरागी जी, भिवानी धर्मशाला; प्रधान करसन स्वामी जी, भिवानी; देवेंद्र स्वामी जी, उप प्रधान कुरुक्षेत्र धर्मशाला; रामनिवास बैरागी जी, कुरुक्षेत्र धर्मशाला तथा चिराग तोमर स्वामी जी उपस्थित रहे।

शिक्षा और संस्कार पर हुआ सार्थक मंथन

कार्यक्रम में मंचासीन सभी अतिथियों को शिक्षा और संस्कार विषय पर अपने विचार रखने का अवसर दिया गया। सबसे पहले पूर्व प्रिंसिपल दया सिंह स्वामी जी ने शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखे। उन्होंने शिक्षा को जीवन निर्माण का आधार बताते हुए संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

इसके बाद मास्टर जगबीर वैष्णव जी ने शिक्षा और संस्कार के विषय पर अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी बातें रखीं। बैरागी अनिल भारद्वाज जी ने भी अपने मुखारविंद से शिक्षा, संस्कार और समाज के भविष्य से जुड़े विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि ज्ञान सिंह बैरागी जी ने लगभग 5 मिनट तक शिक्षा और संस्कार के विषय पर अपने विचार रखे और समाज की नई पीढ़ी को शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता पर बल दिया। भूतपूर्व कर्नल टेकचंद दहिया जी ने भी शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखते हुए समाज के भविष्य को लेकर सार्थक संदेश दिया।

मंच संचालन करते हुए नरेश दास वैष्णव निम्बार्क ने भी लगभग 2 मिनट अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि शिक्षा मनुष्य को ज्ञान देती है, लेकिन संस्कार उस ज्ञान को सही दिशा देने का कार्य करते हैं।

200 वर्षों के बैरागी राजाओं का इतिहास – निःशुल्क पुस्तक वितरण

समारोह का एक विशेष आकर्षण रहा "महंत बने महाराजा" पुस्तक का निःशुल्क वितरण। अंतर्राष्ट्रीय लेखक नरेश दास वैष्णव निम्बार्क द्वारा उपस्थितजनों को पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की गईं। इस पुस्तक में लगभग 200 वर्षों के बैरागी राजाओं के इतिहास को सामने लाने का प्रयास किया गया है।

इसमें राजनांदगांव बैरागी रियासत और छुईखदान बैरागी रियासत सहित बैरागी राजाओं एवं रियासतों के ऐतिहासिक पक्ष को स्थान दिया गया है। पुस्तक वितरण का उद्देश्य केवल पुस्तक देना नहीं, बल्कि समाज की नई पीढ़ी को अपने इतिहास और पूर्वजों के गौरव से परिचित कराना रहा।

स्मृति चिन्ह से सम्मान

कार्यक्रम के समापन से पूर्व मंचासीन समस्त अतिथियों को आयोजन समिति की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। यह क्षण समारोह की गरिमा में चार चाँद लगाने वाला रहा, जिसमें आयोजकों ने अतिथियों के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं सम्मान को मूर्त रूप प्रदान किया।

भोजन प्रसाद एवं आत्मीय मिलन

कार्यक्रम के समापन के बाद सभी मंचासीन अतिथियों एवं उपस्थित समाजबंधुओं ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। भोजन की व्यवस्था अच्छी रही और सभी ने प्रेम एवं आत्मीयता के साथ प्रसाद ग्रहण किया।

एक समारोह नहीं, एक नई सोच की शुरुआत

आज का यह कार्यक्रम केवल एक सामान्य मिलन समारोह नहीं था। यह शिक्षा, संस्कार, इतिहास और समाज की नई पीढ़ी के भविष्य को लेकर एक सकारात्मक सोच की शुरुआत के रूप में याद किया जाएगा।

यदि समाज की आने वाली पीढ़ी को आधुनिक शिक्षा के साथ अपने संस्कार, संस्कृति और इतिहास का ज्ञान दिया जाए, तो वह आत्मविश्वास के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
आज के समारोह का संदेश सरल लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा –
"शिक्षा से भविष्य बनता है, संस्कार से चरित्र बनता है, और इतिहास से समाज को अपनी पहचान मिलती है।"
इस ऐतिहासिक एवं विचारपूर्ण आयोजन में उपस्थित सभी सम्मानित अतिथियों, वक्ताओं, आयोजकों और समाजबंधुओं का हृदय से आभार एवं धन्यवाद।
शिक्षित समाज – संस्कारित समाज – सशक्त समाज।
जय श्री कृष्णा। राधे-राधे।
प्रस्तुति: नरेश दास वैष्णव निम्बार्क
अंतर्राष्ट्रीय लेखक, शोधकर्ता एवं यू.एन. वेटरन
वेबसाइट: www.nareshswaminimbark.in

विशेष रिपोर्ट
वैष्णव बैरागी समाज के बढ़ते कदम

ग्राम भापड़ोदा, जिला झज्जर — सेवा, संस्कार और अनुशासन की एक गाथा

प्रकाशनार्थ: सनातन भारत नया सवेरा मासिक पत्रिका

जिला झज्जर के छोटे-से गांव भापड़ोदा में एक परिवार ने सिद्ध कर दिया कि सेवा, संस्कार और अनुशासन के बल पर कोई भी सीमा असंभव नहीं। यह गाथा केवल एक कुटुंब की उपलब्धि नहीं, अपितु समस्त वैष्णव बैरागी समाज की सामूहिक शक्ति का प्रमाण है। यह परिवार बताता है कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपे गए संस्कार ही वह पूंजी हैं, जो साधनों की सीमाओं के बावजूद संतानों को शिखर तक पहुंचा देते हैं।

दीपोत्सव के पावन अवसर पर एकत्र भापड़ोदा का यह संस्कारवान परिवार
कर्तव्य की प्रथम पंक्ति में

परिवार के मुखिया श्री देवेंद्र कुमार जी वर्तमान में दिल्ली पुलिस में उप-निरीक्षक के पद पर देश की सेवा में तत्पर हैं। वर्दी धारण करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनुशासन जीवन-शैली बन जाता है, और यही अनुशासन उन्होंने अपने संपूर्ण परिवार में भी सींचा। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बबीता जी भारत सरकार के डाक विभाग में पोस्टमास्टर के पद पर कार्यरत हैं और अपने कर्तव्य के प्रति अटूट निष्ठा के लिए विशेष रूप से सम्मानित हो चुकी हैं। दोनों ने मिलकर परिवार में समय की पाबंदी, सेवा-भाव और सादगी को रोज़मर्रा का आचरण बनाया। यह दंपति संस्कारों की वह नींव है, जिस पर संतानों ने आगे चलकर सफलता के शिखर गढ़े — और आज भी परिवार की प्रत्येक उपलब्धि के मूल में यही अनुशासित पालन-पोषण दिखाई देता है।

रक्षा-क्षेत्र में योगदान



बड़े सुपुत्र श्री दिक्षित कुमार जी पूर्व में राष्ट्रीय बीज निगम (NSC) में कनिष्ठ अभियंता (JE) के पद पर कार्यरत रहे। उन्होंने वहां तकनीकी दक्षता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया, जिसके बल पर उन्हें रक्षा मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक उपक्रम BEML लिमिटेड में सहायक प्रबंधक के पद पर नियुक्ति मिली। रक्षा-उत्पादन जैसे संवेदनशील एवं राष्ट्रीय महत्व के क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए वे प्रतिदिन उसी अनुशासन का पालन करते हैं, जो उन्हें बचपन से विरासत में मिला। एक ग्रामीण परिवेश से निकलकर राष्ट्र-सेवा के इस महत्वपूर्ण उपक्रम तक पहुंचना, उनकी लगन और परिश्रम का प्रमाण है।

प्रशासनिक उत्कृष्टता का उदाहरण

पुत्री सुश्री पल्लवी जी ने Bhartiya Vidyapeeth College, IP University से अपनी शिक्षा पूर्ण की और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC) में वैज्ञानिक-बी के पद से अपने कार्यकाल का आरंभ किया। परिश्रम और दक्षता के बल पर वे वैज्ञानिक-सी एवं उप निदेशक के पद तक पदोन्नत हुईं। उनके कार्यकाल में उन्होंने 'वन नेशन वन इलेक्शन' जैसी महत्वाकांक्षी परियोजना, 'e-VSP' के डिजिटल शुभारंभ, तथा ब्रिक्स (BRICS) सम्मेलन जैसे अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में सक्रिय योगदान दिया। इन्हीं उल्लेखनीय सेवाओं के लिए विधि एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उन्हें

प्रमाणपत्र एवं विशेष सम्मान से नवाजा गया — यह उपलब्धि दर्शाती है कि प्रशासनिक क्षेत्र में भी परिवार की बेटियां किसी से पीछे नहीं।

विश्व-मंच पर परचम

छोटे सुपुत्र श्री दीक्षांत कुमार जी ने लंदन की विश्व-विख्यात संस्था **Queen Mary University** से विधि **(Law)** विषय में **LLM** की उपाधि मेधा-सूची में शीर्ष स्थान के साथ अर्जित की। इस असाधारण उपलब्धि पर ब्रिटेन के उच्चायुक्त ने स्वयं आगे बढ़कर उन्हें सम्मानित किया और बधाई दी — यह क्षण भारतीय प्रतिभा की अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति का जीवंत प्रमाण बन गया। इसके पश्चात उन्हें ब्रिटेन, नीदरलैंड्स और जर्मनी की प्रतिष्ठित संस्थाओं से उच्च शिक्षा हेतु आकर्षक प्रस्ताव प्राप्त हुए। किंतु मातृभूमि के प्रति निष्ठा उनके संस्कारों की सच्ची पहचान है — आज वे विदेश की चमक-दमक को त्यागकर भारत में ही शोध और सेवा के अवसर तलाश रहे हैं।

॥ संस्कार वह अनुशासन है, जो पीढ़ियों को सेवा के पथ पर एकसाथ खड़ा रखता है ॥

समाज के लिए एक संदेश

यह परिवार बताता है कि साधन सीमित हों तब भी संकल्प असीम हो सकता है। सेवा को साधना और अनुशासन को आचरण मानने वाला यह कुटुंब आज हर वैष्णव बैरागी परिवार के लिए एक जीवंत उदाहरण है — कि परिश्रम और संस्कार मिलकर किसी भी सीमा को लांघ सकते हैं। पुलिस-सेवा से लेकर डाक-विभाग तक, रक्षा-उत्पादन से लेकर राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र तक, और अंततः विश्व की सर्वोच्च शिक्षण संस्थाओं तक — इस परिवार की यात्रा प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्टता की मिसाल प्रस्तुत करती है।

यह उपलब्धियां केवल एक परिवार की नहीं, अपितु समस्त समाज के सामूहिक आशीर्वाद और सहयोग का प्रतिफल हैं। ऐसी ही प्रेरक गाथाएं वैष्णव बैरागी समाज की असली पूंजी हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को सेवा, संस्कार और अनुशासन के पथ पर चलने की प्रेरणा देती रहेंगी।

सनातन वैष्णव बैरागी परंपरा सदैव त्याग, तप और सेवा को सर्वोपरि मानती रही है। इस परिवार ने उसी परंपरा को आधुनिक युग के संदर्भ में जीवंत करके दिखाया है — चाहे वह वर्दी की जिम्मेदारी हो, प्रशासनिक कर्तव्य हो, अथवा अंतरराष्ट्रीय शिक्षा का शिखर, प्रत्येक क्षेत्र में इस परिवार ने समाज का मस्तक ऊंचा किया है। ऐसे परिवार समाज के लिए दिशा-सूचक होते हैं, जिनसे प्रेरणा लेकर अन्य परिवार भी अपने बच्चों को सेवा, संस्कार और अनुशासन की राह पर अग्रसर कर सकते हैं।

नरेश दास वैष्णव निम्बार्क

अंतर्राष्ट्रीय लेखक ▪ शोधकर्ता ▪ UN वेटरन

www.nareshswaminimbark.in

यात्रा — बंदूक से कलम तक

अखाड़े से शहादत तक: शहीद संजय कुमार वैष्णव की अमर गाथा

रामनगर गन्नौर से लेबनान तक — सनातन वैष्णव बैरागी परंपरा की यात्रा श्रृंखला के अंतर्गत प्रस्तुत है एक ऐसे वीर सपूत की गाथा, जिसने अखाड़े के अनुशासन से सैन्य कर्तव्य तक अपने जीवन को राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

प्रारंभिक जीवन — जोनमाना की माटी का लाल

उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद की उर्वर माटी ने समय-समय पर ऐसे वीरों को जन्म दिया है जिन्होंने अपनी रगों में बहते रक्त से इतिहास की धारा बदली है। इसी जनपद के ग्राम जोनमाना में सन् 1971 में संजय कुमार वैष्णव टीलावत का जन्म हुआ। एक प्रतिष्ठित आयुर्वेदिक एवं एलोपैथिक चिकित्सक श्री श्याम दास वैष्णव और माता श्रीमती ओमवती देवी के आँगन में जन्मे संजय जी का बचपन सामान्य बालकों जैसा नहीं था। मात्र 13 वर्ष की आयु में उन्होंने अखाड़े की धूल को माथे से लगाकर पहलवानी के गुर सीखना प्रारंभ कर दिया था।

ऐतिहासिक दंगल — जब दिग्गज ने टेके घुटने

गाँव में आयोजित एक विशाल दंगल में हरियाणा के एक अति-प्रतिष्ठित पहलवान से उनका मुकाबला हुआ। अपनी चपलता और तकनीकी श्रेष्ठता का परिचय देते हुए संजय ने 'निकाल वाला दांव' लगाया और उस दिग्गज पहलवान को पल भर में परास्त कर दिया। वह विजय केवल संजय की नहीं, पूरे गाँव के गौरव की विजय थी। उस शाम ग्रामीणों ने उन्हें घोड़ी पर बैठाकर गाजे-बाजे के साथ पूरे गाँव में घुमाया।

सैन्य सेवा और सर्वोच्च बलिदान

अखाड़े के अनुशासन और जज़्बे ने उन्हें मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रेरित किया। सन् 1987 में मेरठ की भर्ती रैली में उनका चयन सेना की प्रतिष्ठित '9 पैरा' यूनिट में हुआ। आगरा के पैरा ट्रेनिंग स्कूल में कठोर प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् सन् 1989 में उनकी तैनाती बेंगलुरु में हुई। कर्तव्य पथ पर अडिग रहते हुए, ड्यूटी के दौरान परेड करते समय वे वीरगति को प्राप्त हुए।

त्याग और अमिट विरासत

शहीद संजय कुमार वैष्णव अपने पाँच भाइयों में सबसे ज्येष्ठ थे। उनके बलिदान के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा वैष्णव (निवासी भैंसवाल, शामली) ने बड़े धैर्य और गरिमा के साथ उनके गौरव को संजोया। उनकी कोई संतान नहीं हुई, किंतु आज पूरा जोनमाना गाँव उन्हें अपनी संतान मानकर पूजता है। पत्नी रेखा वैष्णव जी का देहावसान सन् 2019 में हुआ, किंतु इस परिवार का त्याग इतिहास में अमर हो गया।

अपने वीर सपूत की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए ग्राम जोनमाना में उनकी एक भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है — आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवंत पाठशाला, जो सदैव यह संदेश देती रहेगी कि मातृभूमि की सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

पूरी गाथा पढ़ें — 'यात्रा: बंदूक से कलम तक' (अध्याय 30, पृष्ठ 80-82)। लेखक: नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क' (लेखक, पत्रकार, शोधकर्ता एवं पूर्व सैनिक)।
www.nareshswaminimbark.in

प्रश्नोत्तरी

अपना ज्ञान परखें

1. भगवद्गीता महाभारत के किस पर्व में स्थित है?

उत्तर: भीष्म पर्व

2. विदुर नीति किस पर्व में वर्णित है?

उत्तर: उद्योग पर्व

3. श्रीराम को किस उपाधि से जाना जाता है?

उत्तर: मर्यादा पुरुषोत्तम

4. भारत को स्वतंत्रता किस वर्ष मिली?

उत्तर: 1947

5. रामायण के रचयिता कौन माने जाते हैं?

उत्तर: महर्षि वाल्मीकि

6. शहीद संजय कुमार वैष्णव किस पैरा यूनिट में कार्यरत थे?

उत्तर: 9 पैरा

7. विदुर किसके मंत्री थे?

उत्तर: राजा धृतराष्ट्र

8. श्रीराम ने पिता के वचन की रक्षा हेतु क्या स्वीकार किया?

उत्तर: वनगमन (वनवास)

स्रोत एवं संदर्भ सूची

इस अंक में प्रस्तुत सामग्री निम्नलिखित ग्रंथीय एवं ऐतिहासिक स्रोतों पर आधारित है। पाठकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे मूल ग्रंथों का अध्ययन स्वयं भी करें।

प्रमुख संदर्भ

- महाभारत — भीष्म पर्व (भगवद्गीता)
- महाभारत — उद्योग पर्व (विदुर नीति, विदुर-धृतराष्ट्र संवाद)
- वाल्मीकि रामायण
- पारिवारिक एवं स्थानीय स्रोत — ग्राम जोनमाना, बागपत (शहीद संजय कुमार वैष्णव की गाथा हेतु)
- विद्यालय अभिलेख — गवर्नमेंट हाई स्कूल, ग्राम रामनगर, गन्नौर, सोनीपत

पत्रिका का प्रयास रहा है कि धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक तथ्यों के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखा जाए। किसी भी त्रुटि की स्थिति में पाठक हमें सूचित कर सकते हैं, ताकि आगामी अंकों में सुधार किया जा सके।

आपके विचार आमंत्रित हैं

'सनातन भारत — नया सवेरा' आपकी पत्रिका है। हम चाहते हैं कि यह पत्रिका पाठकों के विचारों, सुझावों और अनुभवों से समृद्ध हो।

यदि आप इस अंक के किसी विषय पर अपनी प्रतिक्रिया देना चाहते हैं, कोई सुझाव देना चाहते हैं, अथवा आगामी अंकों के लिए विषय प्रस्तावित करना चाहते हैं, तो कृपया हमें लिखें।

संपर्क करें

- वेबसाइट: www.nareshswaminimbark.in
- विषय: सुझाव, प्रतिक्रिया अथवा आलेख हेतु प्रस्ताव भेजे जा सकते हैं

संपादक की ओर से

एवं अगले अंक की झलक

इस 19वें अंक को आप तक पहुँचाते हुए हमें विशेष प्रसन्नता है। हमारा प्रयास रहा है कि यह अंक शोधपरक, संतुलित और पठनीय हो, तथा 15 अगस्त के अवसर पर स्वतंत्रता, कर्तव्य और सांस्कृतिक चेतना के विषयों को उचित सम्मान के साथ प्रस्तुत करे।

यह पत्रिका पूर्णतः निःशुल्क है और इसका उद्देश्य केवल ज्ञान, संस्कार और सकारात्मक संवाद का प्रसार करना है। हम आशा करते हैं कि यह अंक देश-विदेश के पाठकों तक पहुँचकर सनातन मूल्यों और भारतीय इतिहास के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक होगा।

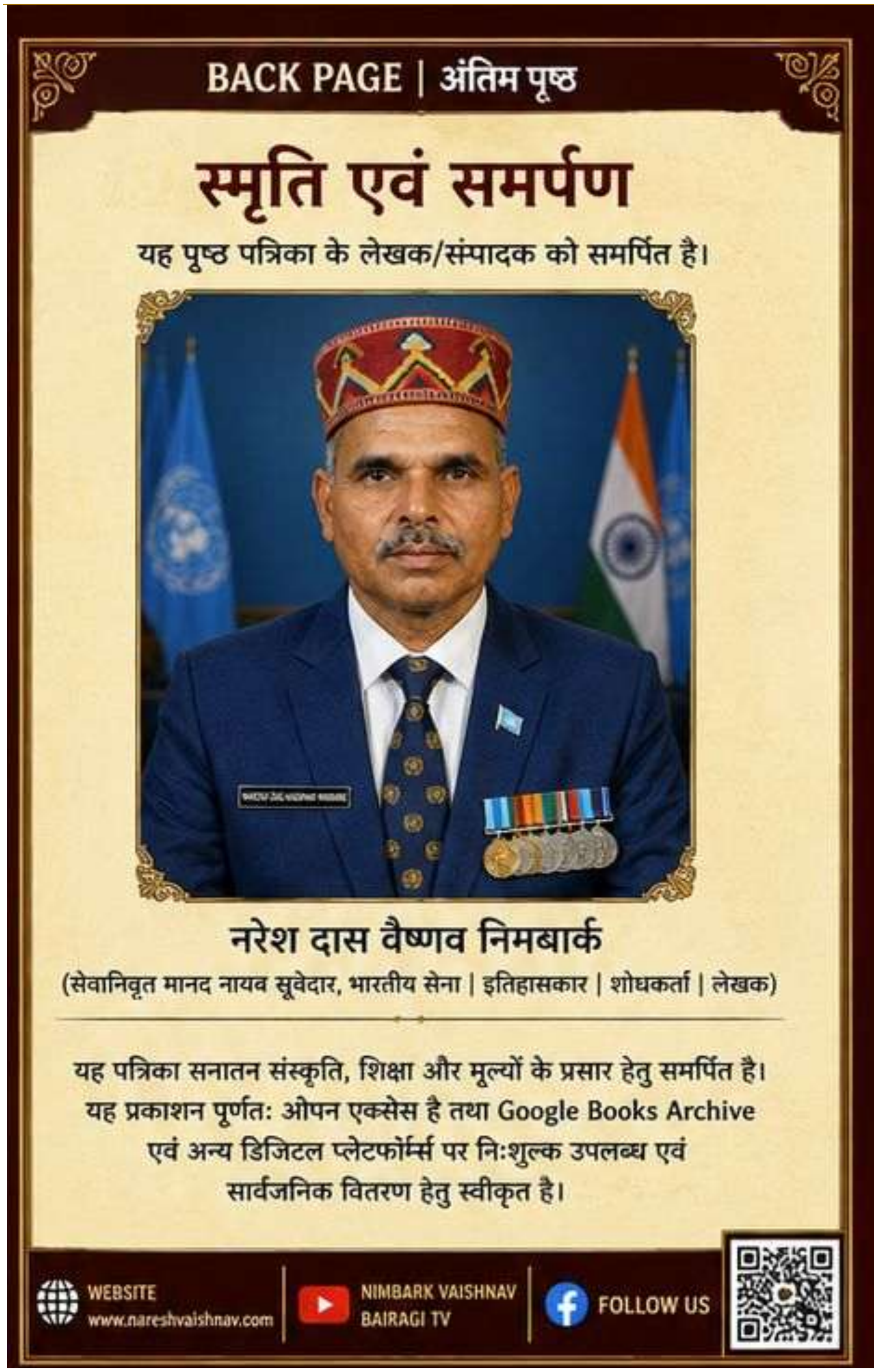
अगले अंक में

- रामायण के अतिरिक्त प्रसंग
- भारतीय पर्व-परंपरा पर विशेष लेख
- प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति
- पाठकों के चयनित सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ

धन्यवाद।

संपादक मंडल

'सनातन भारत — नया सवेरा'


BACK PAGE | अंतिम पृष्ठ
स्मृति एवं समर्पण
यह पृष्ठ पत्रिका के लेखक/संपादक को समर्पित है।
नरेश दास वैष्णव निमबार्क
(सेवानिवृत मानद नायब सूबेदार, भारतीय सेना | इतिहासकार | शोधकर्ता | लेखक)
यह पत्रिका सनातन संस्कृति, शिक्षा और मूल्यों के प्रसार हेतु समर्पित है।
यह प्रकाशन पूर्णत: ओपन एक्सेस है तथा Google Books Archive
एवं अन्य डिजिटल प्लेटफोर्म्स पर नि:शुल्क उपलब्ध एवं
सार्वजनिक वितरण हेतु स्वीकृत है।
WEBSITE
www.nareshvaishnav.com
NIMBARK VAISHNAV
BAIRAGI TV
FOLLOW US